



SHRI JAGDISH LAL AHUJA

Shri Jagdish Lal Ahuja usually known as 'Langar Baba' in Chandigarh has widely inspired many people with his immense courage of providing food to more than 1000 of people since decade. His service of disturbing food is very helpful for the people who were starving for food.

2. Born on 5th January, 1935 in Peshawar (now in Pakistan), Shri Ahuja came to Patiala along with the family at the age of 12 years. He used to stay in refugee camp then moved to Mansa, afterwards got shifted to Dharmshala and finally he came back to Patiala where he started selling bananas and oranges at the age of 16.

3. In 1956, Shri Ahuja moved to Chandigarh with his family. He hired a room at Rs 7 per month in Kansal village and used to sell fruits for at least 10 years in front of Secretariat which was under construction at that time. That was the hardest time of his life where he used to stay barefoot for a long duration. In 1974, he had to leave the rented room without single penny and started to live in a tent house. After 6 months of such hard time, good time entered into their life. He started his fruit business in Chandigarh and his life took a good turn in financial term.

4. Today, Shri Ahuja has achieved goodwill among people through his langar seva which he started on birth of his son in 1979 in Chandigarh which is being continuing till date. For the last 3 years, he has been providing langar and blankets (in winter) to the attendants/ relatives of patients who came to PGIMER, Chandigarh. On special occasion like Republic Day, Independence Day, Children Day etc. He distributes sweets to children at children ward of PGIMER every year. In all his good deeds he has been supported by his wife Nirmal Ahuja. Presently, he is in the process of making a shelter home for homeless old age people.





श्री जगदीश लाल अहूजा

चंडीगढ़ में लंगर बाबा के नाम से मशहूर श्री जगदीश लाल अहूजा ने एक दशक से 1000 से अधिक लोगों को भोजन उपलब्ध कराने की अपनी दरियादिली से बहुत से लोगों को प्रेरित किया है। उनकी लंगर की सेवा से भूखे लोगों को बहुत सहारा मिला है।

2. श्री अहूजा का जन्म 5 जनवरी, 1935 को पेशावर (अब पाकिस्तान में) में हुआ था। जब वह 12 वर्ष के थे तो उनका परिवार पटियाला आ गया। वह शरणार्थी शिविर में रहे और बाद में वह मंसा चले आए। इसके बाद, वह धर्मशाला में बस गए और आखिरकार, पटियाला आ गए, जहां उन्होंने 16 वर्ष की आयु में केले और संतरे बेचना शुरू किया।

3. श्री अहूजा 1956 में अपने परिवार के साथ चंडीगढ़ चले गए। उन्होंने कंसल गांव में 7 रु. प्रति माह पर एक कमरा किराए पर लिया और लगभग 10 वर्षों तक निर्माणाधीन सचिवालय के सामने फल बेचते रहे। लंबे समय तक नंगे पैर रहना उनके जीवन का सबसे मुश्किल दौर था। 1974 में जब उन्होंने किराए का कमरा छोड़ा तो बिल्कुल खाली हाथ थे। उसके बाद, वह टेंट हाऊस में रहने लगे। इस मुश्किल दौर के 6 महीने बाद, उनके जीवन में खुशहाली आनी शुरू हुई। श्री अहूजा ने चंडीगढ़ में फलों का कारोबार शुरू किया और उनकी माली हालत सुधरने लगी।

4. आज, श्री अहूजा ने चंडीगढ़ में 1979 में अपने पुत्र के जन्म से शुरू की गई लंगर सेवा के माध्यम से लोगों के बीच सद्भावना अर्जित की है। यह लंगर सेवा अभी भी जारी है। पिछले 3 वर्षों से, वह पीजीआईएमईआर, चंडीगढ़ आने वाले मरीजों के परिचारकों/संबंधियों को लंगर और कंबल (सर्दियों में) बांटते आ रहे हैं। गणतंत्र दिवस, स्वतंत्रता दिवस, बाल दिवस आदि जैसे विशेष अवसरों पर, श्री अहूजा प्रत्येक वर्ष पीजीआईएमईआर के चिल्ड्रन वार्ड में बच्चों को मिठाई वितरित करते हैं। उनकी पत्नी श्रीमती निर्मला अहूजा उनके सभी नेक कार्यों में उनका हाथ बंटाती हैं। इस समय, वह बेघर बुजुर्गों के लिए वृद्धाश्रम का निर्माण कर रहे हैं।